

बंधनमुक्त जीवन ही सत् चित् आनंद स्वरूप

एक बार राजा जनक के हृदय में ज्ञान प्राप्त करने का विचार आया। उसने राज्य में दिंदोरा पिटवा दिया कि, 'जो उसे ज्ञान का उपदेश देंगे उनको वे इच्छा अनुसार धन देंगे, लेकिन यदि वे ज्ञान देने में निष्फल होंगे तो उन्हें कैदी बनाकर कारागृह में बंद कर दिया जाएगा।'

राजा जनक की घोषणा सुनकर बहुत से ऋषि-मुनि राजा को ज्ञान का उपदेश देने के लिए आये। लेकिन राजा को ज्ञान का उपदेश दे नहीं सके। उन्हें शर्त के मुताबिक बंदीवान होना पड़ा। एक बार अष्टावक्र के पिता भी धन प्राप्ति के लोभशय जनक की सभा में गये। राजा ने उनको चर्चा में हरा दिया और कारागृह में भेज दिया।

ऋषिकुमार अष्टावक्र को पिता के बंदीवान बनाए जाने की खबर पहुंची। वे तुरंत ही राजा जनक के दरबार में पहुंच गये। दरबार में सुंदर शरीरधारी और बहुमूल्य आभूषण से सुसज्जित दरबारी महानुभाव बैठे थे। अष्टावक्र को देख सभी सभासदगण हंसने लगे। वे अष्टावक्र की शारीरिक बनावट पर हंस रहे थे तथा ज्ञानियों की सभा में उनकी उपस्थिति को लेकर मजाक बना रहे थे।

अष्टावक्र ऐसे सभासदों के हंसने तथा उनके वर्णन से जरा भी विचलित नहीं हुए। ज्ञानी के लिए मान-अपमान समान होता है। अष्टावक्र ने उनके हंसने का जवाब ज़्यादा हंसकर दिया। ऋषि को हंसते देख जनक ने उनसे सवाल किया 'महाराज' आपके हंसने का कारण?

अष्टावक्र ने कहा 'राजन! यह प्रश्न तो मुझे करना चाहिए!' राजन ने कहा 'क्यों?' अष्टावक्र ने कहा, 'मेरे आने से ही आप हंस रहे थे।' ऋषिकुमार ने कहा, 'इसमें बुरा लगने की कोई बात नहीं कि मेरी तो शारीरिक बनावट ऐसी है बल्कि मुझे तो आपके आंतरिक शरीर पर हंसी आती है। इस बाह्य शरीर के अंदर कितनी दुर्बलता भरी है। उसे देख मुझे ज़्यादा जोर से हंसी आई। मिथिला नरेश ने सभा में ज्ञान चर्चा का डंका पिटवाया था लेकिन यहां तो उनके सभासद और स्वयं राजा भी शरीर के बाह्य रूप-रंग के प्रेमी हैं। यहां ज्ञान चर्चा की बात ही कहाँ है! यहां तो नश्वर शरीर का ही महत्व है।'

राजा जनक ऋषि की बात सुनकर चुप हो गये। सभासदों के सिर शर्म से झुक गये। राजा ने ऋषि का यथायोग्य स्वागत किया और स्थान दिया। बाद में वे अपने शयन कक्ष में आराम करने गये, लेकिन उन्हें ऋषि के कहे शब्द याद आते रहे "राजा जनक के दरबार में ज्ञान की नहीं लेकिन नश्वर शरीर की, रूप-रंग और बनावट की चर्चा होती है, उनका ही महत्व है।" राजा बेचैन थे। वे खड़े होकर अष्टावक्र के पास आए और कहा, "हे ऋषिकुमार! मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि आपही मुझे ज्ञान प्रदान कर सकेंगे। वे ज्ञानी जो लोभ और भयमुक्त होते हैं, वही सत्य ज्ञान निर्भयतापूर्वक दे सकते हैं; वे ही उपदेश देने के अधिकारी हैं। मेरा मन बहुत जल्दी ज्ञान को जानने की आतुरता में है।" ऋषिकुमार ने फिर से कहा "हे राजन! गुरुदक्षिणा दिये बिना ही ज्ञान प्राप्त करना चाहते हो? जो ज्ञान अत्यंत दुष्कर है उसे आप सामान्य धन देकर खरीदना चाहते हो? महाराज ने कहा "हे ऋषिकुमार! चाहें तो आप मेरे राज्य का समग्र खज़ाना ले लीजिए लेकिन मुझे ज्ञान प्रदान करें।"

अष्टावक्र ने कहा "राजन! राजकोष आपका नहीं है। ये तो प्रजा का है। उसमें से आप खर्च नहीं कर सकते।" राजा ने पुनः कहा "तो फिर समग्र राज्य आप ले लीजिए।" ऋषि ने जवाब दिया, "राज्य मिथ्या है।" जनक ने कहा, "मेरा शरीर ले लीजिए।" अष्टावक्र ने कहा, "ये तो मन के अधीन है।" जनक ने कहा, "तो मेरा मन ले लीजिए।" अष्टावक्र ने सहमति जताते हुए कहा, "हाँ! मन ले सकता हूँ। आप अपना मन मुझे देने का संकल्प कर लीजिए। राजा ने वैसा ही किया। अष्टावक्र ने कहा, "राजा अब मैं एक सप्ताह बाद आऊंगा, तब आपकी इच्छा पूरी करूंगा।" ऐसा कहकर उसने अपने पिता को ले जाते हुए कहा "आप ये नहीं भूलना कि आपने अपना मन मुझे दे दिया है।"

राजा जनक प्रतिज्ञाबद्ध हो गये। चलते-फिरते, उठते-बैठते मन में विचारते रहे कि उन्होंने मन को समर्पित कर दिया है। इसी चिंतन में उनकी सर्व प्रकार की क्रियायें शांत हो गईं। समयपूर्वक ऋषिकुमार वापिस आये। राजा की कुशलता पूछी। राजा ने कहा, "हे ब्रह्मचारी! कुशलता आपके अधीन है। मन तो आपको दे दिया है। आपको मन देकर मैं तो जड़ बन गया हूँ। इस स्थिति में रहकर ही शांति मिली है इसलिए कुशल हूँ।" अष्टावक्र ने कहा, "राजन इस जड़ता को आप समझ लीजिए, या तो आप आत्मज्ञान (चेतनता) को प्राप्त कर चुके हैं या फिर उसकी स्मृति के बहुत नज़दीक हैं। अब आप ज्ञान प्राप्त करने के लिए समर्थ हो गये हैं। राजन! संसार के विषय मन के अधीन हैं, आत्मा के अधीन नहीं। मन ही देही है, आत्मा विदेही है। मन जब तक शरीर की ओर लगा रहता है तब तक मन आत्मा की ओर नहीं लगता। प्राणी जब मन को ज्ञान को समर्पित कर देता है तब आत्मा की ओर उसकी आसक्ति बढ़ती है और तब प्राण के कोष बंधनमुक्त होते हैं और जीवन सत् चित् आनंद बनता है। जीव की यही परमोन्नति है। शरीर पर विशुद्ध ज्ञान से स्वयं को शुद्ध करके सूक्ष्मता की ओर गति करने को ही जीव की परमोन्नति कहते हैं।

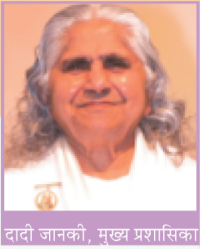
राजा जनक! आपने मुझको अपना मन समर्पित कर दिया। परंतु मैं आपके मन के साथ ज्ञान वापिस कर रहा हूँ। आप इसी ज्ञान के अधीन रह राज्य संचालन करें। सर्व जीवों में आप आत्मा का अनुभव करें। इतना कह अष्टावक्र चल दिए।

राजा जनक विनयपूर्वक आग्रह करते हुए बोले, 'मुझे ज्ञान प्राप्त हो गया है। आप यहीं रहें।' अष्टावक्र ने कहा "राजन! क्या आप मुझे सांसारिक वैभव व सुख में बांधना चाहते हैं?" ऐसा कहकर सभी ज्ञानियों को कारागृह से मुक्त कराए वे अपने आश्रम चल दिए।



- ब्र. कु. गंगाधर

सेवा में अभिमान न हो तब कहेंगे पूर्ण समर्पण



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

अभी संगमयुग है इसमें एक है बाबा, दूसरा मैं हूँ आत्मा, फिर संगम का समय, फिर बाबा ने इतना बड़ा अविनाशी यज्ञ रचा है। इतना बड़ा परिवार है। अभी किसकी महिमा करें अपने भाग्य की या भगवान की? यज्ञ की या समय की या परिवार की? परिवार को देख वो गीत याद आता है, जिसकी रचना इतनी सुन्दर वो कितना सुन्दर होगा... रचयिता आ करके ड्रामा के आदि- मध्य-अन्त का ज्ञान देता है। जब देवी देवता धर्म का नाम-निशान नहीं रहा, और ही खान-पान अशुद्ध होना, यह भी धर्म की ग्लानि है। फैशन धर्म की ग्लानि है, ऐसी धर्म ग्लानि के समय बाबा आता है। बाबा बहुत दयालु, कृपालु है, अपना बनाके कहता है तुम मात-पिता को याद करो, तो पूर्व जन्मों का क्या, पर इस जन्म में भी जो कुछ किया है, क्षमा कर देता है। अभी का किया हुआ क्षमा कर देता है। फिर श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति देता है।

साधारण पुरुषार्थ वाला जीवन कोई मिसाल नहीं है। हमको मिसाल बनने के लिए बाबा ने जो समझ दी है, उसके आधार पर बहुत सूक्ष्म देही-अभिमानि स्थिति में रहें, राजयोगी माना ही कर्मयोगी बनके रहना। कर्मयोगी माना ही सच्चा योगी। श्रीमत

पर इस तन-मन-धन से श्रेष्ठ कर्म करके गति-सद्गति को पाना है। सेवा में अभिमान ज़रा भी न हो तब कहेंगे समर्पण क्योंकि कई हैं जो समर्पण होकर सेवा नहीं करते हैं, करते भी हैं कोई और सेवा के अभिमान से नहीं छूटते तो इसको क्या कहेंगे! आप लोग भी देखो पवित्रता की गहराई में जाओ फिर बाबा सत्य है, ज्ञान सत्य है तो व्यवहार में भी हमारे सत्यता हो। झूठ बोलने की बात ही नहीं है। धैर्यता होने से कभी भी उतावलेपन में कुछ बालेंगे नहीं, करेंगे भी नहीं, बल्कि सोचेंगे भी नहीं। फिर नम्रता है, मधुरता है। किसी ने कहा खुशी और नशा इसमें क्या फर्क है? ज्ञान तो सुन लिया, अच्छा लगा पर अगर मुझमें कोई भी कमी है... तो जिसे सुनाया उसका तो भला हो गया, पर मुझे सेवा का जो फल मिलना चाहिए वो नहीं मिलेगा। सच्ची दिल से सेवा करने से अथक भव का फल मिल जाता है, थकेंगे नहीं। कभी ऐसे रफ नहीं बोलेंगे। सेवा करे फिर रफ बोले तो वो सेवा क्या है? बोलना और चलना समान हो तो सेवा है, तो नशा और खुशी भी है। वैसे नशों में है नुकसान, पर यह नशा लक्ष्मी-नारायण बनने का है। लक्ष्मी माना लक्षण ऐसे हों, नारायण माना करनी ऐसी हो। बाबा ने कहा स्वदर्शन-चक्र फिराते रहो।

पहली अंगुली है मैं कौन? दूसरी अंगुली है मेरा कौन?

तीसरी अंगुली है स्वदर्शन-चक्र। हम कल्प पहले वाले हैं फिर भी होंगे... तो यह स्वदर्शन-चक्र फिराते रहो।

गीता ज्ञान दाता कौन? अभी यह पता चला। डायरेक्ट वो कहता है मेरे को याद करो। पहले तो किसको याद करें, पता ही नहीं था। तो ब्रह्माबाबा के द्वारा अच्छी रोशनी दी, नेत्र खोला, मेरे को कैसे याद करो। फॉलो ब्रह्माबाबा को। याद करो शिवबाबा को। ब्रह्माबाबा को देखने से शिवबाबा की याद ज़्यादा अच्छी आती है। दृष्टि शिवबाबा की है पर ब्रह्माबाबा के द्वारा मिली, वह दृष्टि और बोल हमारे लिए कितने कल्याणकारी हैं। तो मेरा बाबा है कल्याणकारी और हम बच्चों को विश्व कल्याणकारी बनाने के लिए बाबा ने कितनी मेहनत की है। बाकी मैं फलाने सेन्टर की इन्चार्ज हूँ, ज़ोन इन्चार्ज हूँ... यह तो माथा खराब करने की बात है। मैं न ज़ोनल इन्चार्ज हूँ, न सेन्टर... मुझे न सेन्टर है, न ज़ोन है, न स्टूडेंट हूँ... फ्री हूँ। अकेली आत्मा बाबा की हूँ फिर सबकी हूँ।



दादी हृदयमोहिनी अति-मुख्य प्रशासिका

कर्मयोगी बनने के लिए कर्म करते बीच-बीच में चेकिंग करो

प्रश्न:- दादी जी, कर्मयोगी बनने के लिए क्या करना चाहिए? कर्म करते क्या संकल्प करें?

उत्तर:- प्रैक्टिस करनी चाहिए कि मैं आत्मा करावनहार इन कर्मों से कर्म करा रही हूँ क्योंकि ज्ञान तो है लेकिन काम शुरु करते समय अटेन्शन होता है फिर काम में ही बुद्धि ज़्यादा लग जाती है, याद की तरफ थोड़ी कम हो जाती है। इसके लिए कर्म करते समय बीच-बीच में चेकिंग करें कि मैंने तो कर्मयोगी बनके कर्म करना शुरु किया था। तो मेरा कर्मयोग है? ऐसे चेकिंग बीच-बीच में करनी चाहिए। कर्मयोगी बनना है तो अटेन्शन देना पड़ेगा।

प्रश्न:- दादी जी, योग में 3-4 स्टेज आती हैं, एक है मनन कर रहे हैं, बाबा से रूहरिहान कर रहे हैं, दूसरा है डबल लाइट हैं, तीसरा बाबा समान बिन्दू रूप में स्थित हैं, तो कर्म के समय में कौन-सी स्टेज रहेगी?

उत्तर:- जब योग में बैठते हैं तब तो योग की फर्स्ट स्टेज होनी चाहिए। कर्म में तो डबल स्टेज होगी। कर्म की तरफ ध्यान देना पड़ेगा लेकिन ज्ञान का मनन चिंतन, रूहरिहान सहज हो सकती है।

थोड़ा-सा अटेन्शन देंगे तो कर्म में योग सहज हो जायेगा। कर्म में आने की तो जन्म-जन्म आदत पड़ी हुई है तो वो सहज खींच लेती है। इतने जन्म तो बाँडीकॉन्शियस में रहे हैं ना। मैं आत्मा हूँ, इन कर्मों से कर्म करा रही हूँ, यह स्मृति सहज रह सकती है।

प्रश्न:- दादी, बाबा कभी-कभी योग की स्टेज बताते हैं कि जब तुम योग में बैठोगे और जब तुम्हारा योग यथार्थ होगा तो दूसरी कोई भी आवाज़ें सुनाई नहीं देंगी, मुरली सुनना भी बन्द हो जायेगा... इतना योग पावरफुल हो जाये जो दूसरी कोई भी आवाज़ मन को डिस्टर्ब न करे। एक दिन बाबा ने कहा कि मुरली सुनना कोई योग नहीं है...

उत्तर:- मुरली के समय तो मुरली सुनना चाहिए ना। मुरली सुनने के टाइम योग लगाने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिए। योग लगाने लगे तो मुरली मिस हो जायेगी ना। बाबा से मुरली सुन रहे हैं, सुनाने वाला बाबा है। अभी मुरली सुनने के लिए बैठे हैं वो भी एक्क्यूरेट होना चाहिए ना। मुरली की बातें बुद्धि में बैठती नहीं हैं तो मुरली सुनें या पढ़ें ही क्यों! जब फुर्सत मिले तब पढ़ें ना। इसलिए जिस समय जो काम करें वो एक्क्यूरेट होना चाहिए।

प्रश्न:- बाबा तो कहते हैं जो शब्द मुरली में आता है उसका अनुभव करो,

जैसे बाबा ने कहा आत्मा हो तो आत्मा समझके मुरली सुनो, तो दादी यह भी तो योग हो जायेगा ना...

उत्तर:- वो ठीक है, वह तो बाबा कहता है और हम उस अनुभव में चले गये। बाबा ने कहा, उस समय ही वह अनुभव किया। बाकी पीछे भी वही अनुभव चले, तो फिर तो मुरली मिस होगी। जिस समय जो काम कर रहे हैं, उस समय उस विधि से वो काम होना चाहिए। मुरली सुनने के टाइम योग लगा रहे हैं, यह क्या मतलब है! वैसे योग लगाओ ना। इतना टाइम तो मिलता है। यह आदत पड़नी चाहिए।

प्रश्न:- दादी, साकार में बाबा जब योग का अभ्यास कराते थे या मुरली चलती थी तो बाबा की इतनी ऊंची स्थिति हो जाती थी कि घड़ी की टिक-टिक की आवाज़ भी अच्छी नहीं लगती थी। एक बार बाबा ने कहा बच्ची यह घड़ी बाबा को योग में बहुत डिस्टर्ब करती है, तो दादी वह कौन सी स्थिति है?

उत्तर:- इसके लिए बहुत प्रैक्टिस चाहिए और वो स्थिति तो योग की ही होगी, अपने को आत्मा समझें और अशरीरी हो जाएं, यह प्रैक्टिस बहुत चाहिए। बाबा यह भी कहते हैं बच्चे ऐसा योग नहीं लगाओ जो गुम हो जाओ और काम ही रह जायें फिर तो डिस्टर्बेन्स होगी।